वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम. ए. पूर्वार्द्ध परीक्षा

एमएएचडी-01

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

अवधि 3 घंटे **अधिकतम अंक 80**

निर्देश : प्रश्न पत्र खण्ड अ, ब और स में विभाजित है। खण्ड 'अ' अतिलघूत्तरात्मक है, खण्ड 'ब' लघूत्तरात्मक एवं खण्ड 'स' में निबंधात्मक प्रश्न सम्मिलित हैं।

खण्ड ब

इस खण्ड में 8 प्रश्न सम्मिलित हैं। निम्नलिखित प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न कीजिए। शब्द सीमा लगभग 100 से 150 शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का है। 8 × 4 = 32

प्रश्न 1 **सप्रसंग व्याख्या करें -**

कागद पर लिखत न बनत।
कहत संदेसु लजान।।
काहिहे सबु तेरौ हियो।
मेरे हिय की बात।।
थोरे ही गुन रीझते।
बिसराई वह बानि।।
तुम हूँ कान्ह मनौ मए।
आज कालिह के दानि।।

प्रश्न 2 **सप्रसंग व्याख्या करें -**

कूलन में केलित में कहणरन में कुंजन में, क्यारित में कलित कलीन किलकन है कहै पदमाकर परागन में पोन ह में, पातन में पिक के पलासन पंगत है। द्वारे में दिसान में दीपत दिगेत है। बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बलिन में, बनन में बागन में बगदयो बसंत है।

प्रश्न 3 **घनानंद द्वारा प्रस्तुत प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट करे।**

प्रश्न 4 **कबीर की भक्ति पर एक लेख लिखें।**

प्रश्न 5 **'भूषण एक राष्ट्रवादी कवि थे**
आप इस बात से कहा तक सहमत है।

प्रश्न 6 **चन्द वरदा जी का जीवनपरि-चय दीजिए।**

प्रश्न 7 **निधापति के लय, छन्द व अंलकार पर चर्चा करें।**

प्रश्न 8 **जायसी के गुरू एवं उसके विवाह के बारे में क्या प्रसिद्ध है।**

प्रश्नपत्र क्रमांक - 2

प्रश्न 9 **विद्यापति के काव्य रूप पर विचार कीजिए।**

प्रश्न 10 **पद्मावत सूची काव्य है अथवा प्रेम काव्य।**

प्रश्न 11 **तुलसीदास के अलंकार निधाय पर प्रकाश डालें।**

प्रश्न 12 मथुरा के काले लोगों पर व्यंग्य करते हुए गोपियां क्या कहती है ?

प्रश्न 13 सूरदास के प्रकृति वर्णन को विशेषताऐं बतलायें।

प्रश्न 14 'पग घूंघर बांध मीरां नाची रे
पद में मीरा ने क्या भाव व्यक्त किये हैं।

प्रश्न 15 सप्रसंग व्याख्या करें-
"साजि तुरंग वर रण में तुरंग चढि
राजा शिवाजी जंग जीनन चलत है
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद भुद गैवरन के रलत है।
ऐल फेल खैल भे., खलक में गैल- गैल,
गजन के ढेल पेल सैल उलसत है।
तारा सौ तरनि, धूरि धारा में लगत जिमि
धारा पै पारा पारावर ज्यों हलत है।

प्रश्न 16 सप्रसंग व्याख्या करें-
सखि हे हमर दुखद नहिं ओर
ई मर बादर माह भादर मून मंदिर मोर
झंपि घन गरजंनि संतल, मुबन भरि बरंसनिया
कन्त पाहुन काम दारून, सधन, रबर सर हेतिया
कुलिस कत सत पात मुदित, मयूर नाचत मातिया

प्रश्नपत्र क्रमांक - 3

प्रश्न 17 बिहारी द्वारा चित्रित प्रेम और सौन्दर्य के स्वरुप को स्पष्ट करें।

प्रश्न 18 पदमाकर के कलापक्ष की मीमांसा करें।

प्रश्न 19 भूषण का जीव-परिचय देते हुए उनकी कृतियों के बारे में जानकारी दें।

प्रश्न 20 पृथ्वीराज रासो में मृद्ध वर्णन की जीवंतता को समझाइयें।

प्रश्न 21 विद्यापति और जयदेव की रचनाओं में मूल अंतर क्या है।

प्रश्न 22 कबीर जी भाषा-शेली पर अपने विचार रखें।

प्रश्न 23 सप्रसंग व्याख्या करें -
उधोन माने की बात!
जरत पतंग दीप में जैसे ओ फिरि फिरि लपहाय।
रहत चकोर पहुपि कर मधुकर। ससि आकाश मरमान
ऐसो ध्यान घरो हरिजू पै छत इनउ त नाहें जात
दादुर रहत सदा जल भीतर कपलाहें नहिं निमरात।

प्रश्न 24 सप्रसंग व्याख्या करें -
म्हारां रो गिरधर गोपाल दूसरा णां कूयां
छूसरा णां क्रूमां साधो सकल लोक जूंया।।
भामा छाडयां बन्धा छाडयां सगां सूयां
सधा दिग बैठबैठ-, लोक लाज खूयां

भंगत देव्यां राजी हूयां जगत दोव्यां रूयां।
असुवां जल सींच सींच पे्रम बेलबूयां।
दधमथ घृत काढ लयां डार दया घूवां
मीरा री लगण लग्यां, होणा हो जो हूयां।

प्रश्नपत्र क्रमांक - 4

प्रश्न 25 सप्रसंग व्याख्या करें-
कन वज्जह जयचंद। चल्यो दिल्ली पति पषिपन।।
चंद वरहिय तथ्थ । सथ्थ सामंत सूर धन।।
चाहुआन कुरंम। गौर गाजी बड़ गुज्जर।।
जादव रा रघुवंस। पार पुंडीरति पष्पर।।
इतने सहित भूपति छडयो। उसी रेनू छीनो नयो।
इक लस्ष वर लेशिए। चले सथ्थ रजपूत सौ।

प्रश्न 26 सप्रसंग व्याख्या करें-
सखे रे हमर दुखद नहिं ओर
ई मर बादर माह मादर मून मंदिर मोर
झंपि घन गरजंति संतत, मुबन मरि बर संनिया
कंत पाहुन काम दास्न, सघन खर सर हांतिका
कुलिस कत सत पाल मुदित, मयुर नाचत मानिया
मत दादुर डाक डाहुक फटि जामत छातिया
निपिर दिन मरि जोर जापिनि अथिर बिजुरिक पांतिया
विधापति कह कइसे गयाओब हरि बिना दिन रातिया।

प्रश्न 27 संक्षेप में कबीर के जीवन का परिचय दीजिए।

प्रश्न 28 पद्मावत में वर्णित विरह- वर्णन पर टिप्पणी लिखे।

प्रश्न 29 तुलसीदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिये।

प्रश्न 30 ऊधौ और गोपियों की वार्तालाप को अपने शब्दों में लिखें।

प्रश्न 31 मीरा काव्य में दार्शनिक भाव सौन्दर्य पर विचार प्रकट करें।

प्रश्न 32 बिहारी के शिल्प- विधान का परिचय दें।

प्रश्नपत्र क्रमांक - 5

प्रश्न 33 सप्रसंग व्याख्या करें।
ऊधौ विर हो प्रेम करे।
ज्यों बिनु पुट गहे न रंगाहि, पुह ग हे रसहि परै
जो अपने घट दहत अंकुर चिरि, तौसत फरानि सरै।
जो सर सुभट संमुख इन, तो रवि रयति
सूर गोपाल प्रेम पथ जल तै, कोड ने दुखहि डरे।

प्रश्न 34 सप्रसंग व्याख्या करें।

माई सावरे रंग राची
साज शिंगार बांध पग घूंघर लोक लाज तक णांसी
गया कुमत या साधा संगत स्याम प्रीत जग सांची।
गाया गाया हरि गुण किस दिण
स्याम बिक जग खारां लागा जगरी बातां काची
मीरां सिरी गिरिधर नह नागर मगत रसी ली जांची।

प्रश्न 35 बिहारी की कल्पना शक्ति पर लेख लिखें।

प्रश्न 36 पद्माकर के काव्य में लोकजीवन की विवेचना करें।-

प्रश्न 37 रीतिकालीन घनानंद के श्रृंगारपक्ष पर प्रकाश डालें।-

प्रश्न 38 भूषण की राष्ट्रीय चेतना का मूल्यांकन करें।

प्रश्न 39 पृथ्वीराज रासो की कथा संक्षेप में लिखें।

प्रश्न 40 विधापति द्वारा रचित कृत्तियों पर एक टिप्पणी लिखें।

प्रश्नपत्र क्रमांक - 6

प्रश्न 41 विधापति की कृतियों का परिचय दें।

प्रश्न 42 'मोको कहा ढूंढे रे बन्दे में कबीर का क्या उपदेश है।

प्रश्न 43 जायसी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 44 तुलसी दास के जीवन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 45 सूरदास द्वारा वर्णित प्राकृतिक वर्णन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 46 मीरां बाई के काव्य की मीमांसा करें।

प्रश्न 47 एक श्रृंगारिक कवि के रूपमें बिहारी की सिथति का वर्णन करें।

प्रश्न 48 पद्माकर की कृतियाँ के बारे में चर्चा करें।

प्रश्नपत्र क्रमांक - 7

प्रश्न 49 सप्रसंग व्याख्या कीजिए -:
मोको कहा ढूढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में
ना मैं देवल ना मैं मसजिद ना काबै कैलास में
ना तो कौनो क्रियाकर्म में-, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय नो तुरनै मिलि हो, पलमर की तलास में।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वासन की स्वांस में।

प्रश्न 50 सप्रसंग व्याख्या कीजिए -:
फागुन पवनझकोरा बहा। चौगुन सीड जाइ नहि सहा।
त्न जस बियर पाल मा मोरा। तेहि पर बिरहदेर झकझोरा।
लखिर झरहिं, झरहिं बन ढाखा, भई अंनत काले फरि साखा।
कराहि वनस्पति हिये हुलासू मो कह भा जग दून उदासू।

प्रश्न 51 पदमावत समासोक्ति है या अन्योसोक्ति प्रकाश डालें।

प्रश्न 52 'हमारे हरि हारिल की लकरी का प्रसंग लिखें।

प्रश्न 53 मीरां बाई के काव्य में लोक- साहित्य का प्रभाव है स्पष्ट करें।

प्रश्न 54 घनानंद के काव्य में संयोगभावना पर अपने विचार लिखें।-

प्रश्न 55 भूषण के जीवन पर एक लेख लिखें।

प्रश्न 56 पद्माकर की रचनाओं के बारे में चर्चा करते हुए उनके व्यक्तिक पर प्रकाश डालें।

प्रश्नपत्र क्रमांक - 8

प्रश्न 57 कबीर की भक्ति की कुछ प्रमुख विशेषताऐ लिखिये।

प्रश्न 58 जायसी के विरहवर्णन पर एक लेख लिखें।-

प्रश्न 59 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करें।

"सखि हे हमर दुखद नहिं ओर
ई भर बादर माह भादर मून मन्दिर मोर
झंपि घन गरजंति संतत, भुवन भरि बरसंनिया
कं त पाहु न काम दारून्सधन खर सर हंतिया।
कुलिस कत सत पात मुदिन, मयूर नाचत मानिया
मत दादुर डाक डाहु क फाटि जाचन छातिया।

प्रश्न 60 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या करें।

"कबिरा प्याला प्रेम का, अन्तर दिया लगाम
रोम रोम में रमि रहया, और अयल क्या खास
रातामाता नाम का-, पीय प्रेम अघाम
मनवाला दीदार का, मांगै मुकित बलाम।

प्रश्न 61 तुलसी दास के अलंकार विधान पर प्रकाश डालियें।

प्रश्न 62 घनांनद के काव्य में लोकोक्ति एवं मुहवरे का क्या महत्व है।

प्रश्न 63 सप्रसंग व्याख्या कीजिए -:

"ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहन वारी,
ऊँचे घोरमंदर के अंदर रहती है-,
भूषण शिथिल अंग, भूषण शिथिल अंग,
थ्वजिन डुलाती ते वै विजन डुलाती है।
कंदमूल भोग करै, कन्दमूल भोग करे
तीन बेर खाती, सो तो तीन बेर खाती है।

प्रश्न 64 पृथ्वीराज रासो के आधार पर कवि चंद के चरित्र का उल्लेख करें।

प्रश्नपत्र क्रमांक - 9

प्रश्न 65 बिहारी के श्रृंगारस्चित्रण का वर्णन करें।

प्रश्न 66 पद्माकर का जीवन परिचय दीजिए।

प्रश्न 67 'अति सूधो सनेह को मारग है।' किसकी पंक्तियाँ है तथा इस का अभिप्राय क्या है? विस्तार से लिखे।

प्रश्न 68 भूषण का जीवन परिचय दें।

प्रश्न 69 पृथ्वीराज रासो का कथानक संक्षेप में देते हुए इसकी प्रामाणिकता पर विचार करें।

प्रश्न 70 'विधापति के काव्य में प्रÑति सदैव जीवन में चित्रित हुई है वाक्य की सार्थकता स्पष्ट करे।

प्रश्न 71 सप्रसंग व्याख्या करें -

"जाग पिमारी अब का सोने। रैन गई दिन काहे को खौवे
जिन जागा जिन मानिक पास। नै बौरी सब सोय गवामा।
प्रिय तेरे चतुर तू मूरख नारी। कबहु न प्रिय के सेज सवारी।
तै बौरी बौरापन किन्ही। भर जीवन प्रिय अपन न चिन्ही
जाग देख पिय सेज न नेरे। बाहि छंडि उठि गमे सवेरे।
कहै कबीर सोई धुन जागे। शब्द बान उर अन्तर लागै।

प्रश्न 72 सप्रसंग व्याख्या करें -

ऐसो उदार को जग माही।
बिनु सेवा जो द्वे दीन पर राम सरिस कोउ नाही।
जो गति जोग विराग जतन करि नहि पानत मुनि ग्यानी
सो गति देत गीघ सबरी कहे प्रभु न बहुत जिय जानी।
जो सम्पति दससीस अरव करि रखन सिव पाहे लीन्हौं।
सो सम्पदा विभीषन कहै अति सकुचि सहित कहि दीन्हौ।
तुलसीदास सब भाति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम काम सब पूरन करै कृपानिधि लेरो।